# ।। पराभक्ति को अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

## ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ पराभक्ति के अंग का अनुवाद प्रारम्भ ||

|| कवित्त ||

**परा भक्त जाहाँ ऊदत || ताँही अेसा लछ होई ||**
**भजण भाव नही ज्ञान || सोच सांसो नही कोई ||**
**सुख दु:ख एक समान || नही सिसकारो आवे ||**
**तीन लोक की गम || आर पईसे भर पावे ||**
**केस नख नही सुधरे || जीभ स्वाद नही कोय ||**
**परा भक्त सुखराम के || ज्याहाँ अेसा लछ जोय ||१||**

जब भक्त मे पराभक्ती याने होणकाल के परेकी सतस्वरुप की पुर्ण स्थिती उदय होती तब उसके आदिवाले ब्रम्ह माया के भजन भाव व ग्यान नष्ट हो जाते । ऐसे भक्तको मायाके सुखोकी व काल के दु:खोकी फिकीर नही रहती । उसे तन व मन के होनेवाले माया के सुख व काल के दु:ख दोनो सरीखे दिखते । उन दु:खोको देखकर वह चमकता नही या बिंबराता नही । उसे तीन लोकोकी सुख व दु:खोकी मर्यादा समजते रहती । उसका भोजन खुराक एक पैसा भर हो जाता याने उसका आहार बहुत कम हो जाता । उसे उसके बाल बनाना,नाखुन काटना आदि चिजोकी कोई सुध नही रहती मतलब शरीर संवारनेकी जरासी भी सुध नही रहती । उसे जगत के लोगो समान किसी प्रकारका जिभ का स्वाद नही रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिसमे पराभक्ती याने सतस्वरुप की भक्ती उदीत होती है उसमे कुद्रती ये लक्षण आते है ।।।१।।

**लागे ब्रम्ह समांद || देहे की सुध न कोई ||**
**पाँचूं गया बिलाय || म्हो मासो नही लोई ||**
**करामात करतूत || सकळ कूं दूर बिडारी ||**
**मन सो गयो बिलाय || देव बंदत है लारी ||**
**परा भक्त ज्यांहां ऊपजे || दुनिया सकेन मांन ||**
**कोई ज्ञानी सुखराम के || लछ पिछाणे आन ||२||**

उसे सतस्वरुप ब्रम्ह की समाधी लगती । समाधी अवस्था मे उसे देह व जगतकी सुध नही रहती । उसकी पाँचो विषय वासनाये पुर्णत: खतम हुअी रहती । उसका माँ,बाप,पत्नी,पुत्र, धन राज आदि किसीसे भी मासा भर भी मोह नही रहता । उसे मायाके चमत्कार करामात करतुत भाँते नही इस कारण वह चमत्कार करामात करतुत इन सभी चिजोकी खुद से दुर रखता । उसका त्रिगुणी माया के सुखोमे रमनेवाला मन पुर्ण नाश हुवा रहता । उसकी स्वर्गादिक के सभी छोटे से बडे देवताये महीमा करते व दर्शन ले लेकर दंड्वत प्रणाम करते । ऐसे पराभक्त को तीन लोक चवदा भवन के सभी देवता श्रेष्ठ जाणते परंतु जगतके नर नारी उसे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव शक्ती अवतार आदिसे श्रेष्ठ है यह

नही मानते,उलटा अपने बराबरी का मनुष्य समजते है । उस भक्तको सतस्वरुप समजवाला जगतमे जो एखाद ग्यानी रहता वही उसके माया ब्रम्हके परेके अजब लक्षण देखकर ब्रम्हा,विष्णु ,महादेव शक्ती अवतार व माया ब्रम्ह इन सभी के परे सतस्वरुप अवतार है ऐसा देखता ।।।२।।

**परा भक्त के नेम पेम ।। किरीया नही कोई ।।**
**कूँची मुद्रा जोग ।। जाप साझन नही होई ।।**
**हरक कोऊ नही सोग ।। करम अेको नही बंधे ।।**
**गुण इंद्रि सब जीत ।। सुरत साहेब दिस सेधे ।।**
**आया कूं मेटे नही ।। लेण काहुँ नही जाय ।।**
**अे लछण सुखराम के ।। परा भक्त ज्याँहा क्वाय ।।३।।**

ऐसे पराभक्तमे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव अवतार आदि मायाके भक्तोके समान कर्म के नियम कर्म से प्रेम व कर्म क्रिया नही रहती । वे कर्मके नियम प्रेम व क्रियाके परे रहते । वे योगकी किल्ली ,खेचरी,भुचरी,अगोचरी,चराचरी मुद्राओकी साधनाये तथा ऐसी माया की एक भी क्रिया नही साधते । उनको मायाके किसी बात से हर्ष नही होता या किसी बात से उदासी नही आती । वे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती अवतार आदि किसी देवी देवताओका कर्म नही बांधते । उसके घट मे उपजे हुये रजोगुण,तमोगुण,तथा पाँच विषय नाश हुये रहते व उनकी सुरत अष्टोप्रहर साहेबमें लगी रहती । उनके उपर कोई भी संकट आया तो भी वे आये हुये संकट स्थिर होकर झेलते । उन संकटोको मिटानेकी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती आदि माया की कोई विधी नही करते तथा अधिक सुख प्राप्ती के लिये कोई माया की विधी नही साधते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जिसमे पराभक्ती उदीत होती उनमे ये सभी लक्षण कुद्रती प्रगट होते ।।।३।।

**जात पांत कुळ नाही ।। निरख बंदे नही निंदे ।।**
**बिन सतगुर कहुँ जाय ।। साध कोई नही बंदे ।।**
**ध्रम क्रम सुण पाप ।। करत देखे जुग मांही ।।**
**सरस निरस नही होय ।। बंदे निंदे जुग नाही ।।**
**अदभुत चालज अगम हे ।। मो पे कही न जाय ।।**
**परम भक्त सुखराम के ।। केवळ सम कहाय ।।४।।**

ऐसे भक्ताको अपने देहीकी जात,पात,कुल यह मर्यादा नही रहती । उसे सर्व जगत अपनी जात पात कुलका याने अपने हंस के मुळ ब्रम्ह जात का दिखता । उसे सभी ब्रम्ह दिखते इसलीये जगत मे कोई भी मनुष्य वंदनीय या निंदनीय है ऐसा नही लगता इसलीये वह किसी की वंदना नही करता या किसी की निंदा नही करता । उसे जगतके सभी देवीदेवता साधु संत रामजी व सतगुरुके सुख देनेके पराक्रम के सामने जरासे भी पराक्रमी

नही दिखते । वह जगतके ग्यानी, ध्यानी,नर–नारी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती अवतार आदि देवताओके पुण्य,धर्मकर्म,करते देखता व वैसेही विषय विकारोमे व राक्षसी देवताओमे पाप करते हुये देखता परंतु वह उच्च कर्म करनेवाले ग्यानी ध्यानी नर नारीकी महिमा नही करता व निच कर्म करनेवाले नरकीय जीवोकी निंदा नही करता । ऐसी उसकी चाल अद्भुत रहती । समजके परे अगम रहती । वह चाल मुझे शब्दोमे वर्णन करते नही आती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ऐसे ये परमभक्त जैसे सतस्वरुप केवल है,वैसेके वैसे है । ये भक्तोमे व साक्षात केवलमे जरासाभी अंतर नही है ।।।४।।

|| इन्द व द्वन्द ||

**परा सो भक्त तिण पुरूष कूं ऊपजे ।। तांहिका अंग अे लछ होई ।।**
**त्याग बेराग मेमंत मस्तान रे ।। ब्रम्ह की दिष्ट सब मंड जोई ।।**
**भाव प्रभाव प्रमात्मा आतमा ।। अेक सूं दुसरो नाय जाने ।।**
**सुभ असुभ ऊपाय संसार मे ।। आप ही आपको ख्याल ठाने ।।**
**नही हरष सोग संसार मे रेत हे ।। उलट ब्रम्हंड मे जाय बेठा ।।**
**दास सुखराम के पराँ ज्याँहाँ ऊपजे ।। तीन तज ताप कूं होय सेंटा ।।५।।**

उन्हे त्रिगुणी मायासे उपजे हुये सुखोमे जरासीभी प्रीती नही रहती इसलीये इन सभी सुखोसे उनका त्याग रहता उन्हे वैराग्य रहता व वे सतस्वरुप त्याग वैराग्य के सुखमे मदोन्मत्त होकर मस्त रहते । वे सभी सृष्टी को सतस्वरुप ब्रम्हमय सृष्टी समजकर सर्वत्र सतस्वरुपी ब्रम्ह की ब्रम्ह है ऐसा देखते । उन्हे किसी जिव के प्रति उच्च भाव या निचभाव नही रहता । उनमे मेरी आत्मा व दुजेकी आत्मा ऐसा अलग भाव नही रहता । उनमे मै और तु ऐसी विषय समज नही रहती । उन्हे सभी सम दिखते । एक व दुजा जीव ऐसा अलग अलग कभी नही दिखता वे मायाके सुख पाने के लिये जगतकी शुभ या अशुभ ऐसे कोई मायाकी रित नही साधते । वे खुदमे प्रगट हुये सतस्वरुप ब्रम्ह मे खुष रहते । वे संसार मे रहते परंतु उन्हे माया के सुख से हर्ष नही रहता । वे संसारमे शरीर से रमते दिखते परंतु उनका हंस घटमे बंकनाल से उलटकर सतस्वरुप ब्रम्हंड मे रमते रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जिसे पराभक्ती उपजती है वे तन मन व आ आ के गिरनेवाले दु:खोको जरासाभी नही धारते वे साहेब के दिशामे जरासीभी कमजोरी न रखते मजबुत होकर रहते ।।।५।।

**अन्न मुख मांही कौ देत हे ग्रास कूं ।। नीर जळ पाविया पीत्त भावे ।।**
**कपडा आण ओढाय कौ ले चले ।। रीज ना रीस दिल माही आवे ।।**
**देहे भ्रळाट मुख बेण सो स्वावणा ।। लोक तिहूं सरब सो लांघ बोले ।।**
**पवन के ऊपरे गिगन मे घर करे ।। जाय अस्मान की पोळ खोले ।।**

**चंद नही सूर कौ रात नही दिन हे ।। करम की रेख पर मेख मारी ।।**
**दास सुखराम के लछ ये जानीयो ।। परा सत्त भक्त हे अेम सारी ।।६।।**

उनके मुखमे किसीने अन्न ग्रास दिया तो वे खा लेते वैसेही किसीने पानी पिलाया तो पी लेते । उन्हे थंड या गरम की सुध नही रहती । वे समाधी अवस्थामे बैठते या शरीर धरतीपे डालकर लेटे रहते । थंड्मे किसीने कपडा ओढा दिया तो ओढ लेते व वही कपडा थंडीमे किसीने निकाल लिया तो निकालने वालोको मना नही करते व गरमी मे किसीने कुलर,पंखा,लगा दिया तो खुष नही होते या वही कुलर,पंखा बंद कर दिया तो बंद करनेवाले पे नाराज नही होते । इसप्रकार उनके साथ अच्छा बर्ताव करो या बुरा बर्ताव करो उनको किसीसे उपर खुषी नही आती या किसी के उपर नाराजी नही आती । उनका देह सतस्वरुप आनंद से झलकते रहता व उनके मुखसे निकलनेवाले हर वचन वाक्य सुननेवाले श्रोता को प्यारे लगते मिठे लगते व वे तीन लोक चवदा भवन के परेके चौथे लोक का ग्यान बोलते वे पारब्रम्ह के सोहम स्थान के परे सतस्वरुप गिगन मे घर करते व वे समाधी मे उस सतस्वरुप देशमे जाते । उस सतस्वरुप के देशमे यहाँ के समान चाँद,सुरज,रातदिन,आदि कुछ नही रहता । वहाँ सदा एक सरीखा सुहाना प्रकाश रहता । वे दसवेद्वार मे संचित कर्म खाक करते व सभी काळ कर्म नष्ट कर माया ब्रम्ह की सत्ता सदाके लिये खतम कर देते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जिस भक्त मे ये लक्षण प्रगट होते वही सच्चा पराभक्त है ऐसा जानो ।।।६।।

**च्यार सो ग्यान ऊर माँही जो ऊपजे ।। पांचवे ज्ञान की गम नाही ।।**
**तांह लग पेम ऊपाय की भक्त हे ।। मून गेहे प्रेम ठेराय माँही ।।**
**लछ सूं मन सूं खेंच ऊर धारीयो ।। चाल अर हाल अरू घेर लावे ।।**
**परा सो भक्त तिण पूरूष कूं ऊपजे ।। पेल सब मन की बास जावे ।।**
**पाँच सो इंद्रियाँ जीवती तन में ।। ऊलट घर आद मे नांही पेठा ।।**
**दास सुखराम के तांहि लग अंग रे ।। ज्ञान मे सांभळी धार बेठा ।।७।।**

जिस हंस के उरमे माया के मतग्यान,श्रुतग्यान,अवधीग्यान,मनपर्चेग्यान ऐसे चार ग्यान उपजे है परंतु पाँचवा कैवल्य ग्यान उपजा नही तबतक उसमे मोह माया का ही ग्यान उपजा है वैराग्यी कैवल्य ग्यान विग्यान उपजा नही है ऐसा समजो । वह मौनी बनकर हट कर कर मन मे कैवल्य के लिये प्रेम लाता है । कैवल्य उपजनेपे जैसे पाँची इंन्द्रीय वासना नष्ट हो जाती है वैसे कृत्रीम रुपसे मन को खिच खिचकर घेर घेरकर पाँचो वासनाओ के परेका कृत्रीम वैरागी बनता है व ऐसी कृत्रीम स्थिती आनेपे मुझे पराभक्ती उपज गयी ऐसा मनसे समज लेता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,पराभक्ती जिस पुरुष को उपजती है उनकी सर्वप्रथम पाँचो वासनाये पुर्णत:मीट जाती है बाद मे उन्हे कैवल्य उपजता है । जिनके पाँचो इंद्रियो के विषय तनमे जिंन्दे है तबतक वे तनमे

उलटकर सतस्वरुप आद घर नही पहुँचे यह समजो । उन्होंने पराभक्त के स्वभाव पराभक्तोके ज्ञानमे सुन सुनकर धारण किये है । उनके ये स्वभाव पराभक्त के समान कुद्रती प्रगट हुये नही है ।।।७।।

**बंदगी बंदगी करत रे ।। बासना सेंग जळ जाय नही रहे जा की ।।**
**तां दिना भक्त सो परा घट ऊपजे ।। क्रम जु अेक ना रहयो बाकी ।।**
**पांच पैमाल पचीस सो मर रहया ।। तीन के ऊपरे जीण मांडे ।।**
**नवको आसरो लंगण को आवीयो ।। ता दिनां सरब सूं प्रित छाडे ।।**
**बिच में हटबिन बंदगी मून गहे ।। ताहे कूं ज्ञान नही परा आई ।।**
**दास सुखराम के करम कोई पूँचीयो ।। भ्रम सो ऊपजो मन मांई ।।८।।**

संत की सतस्वरुप रामनाम का भजन करते करते सभी पाँचो वासनाये जल जाती है । यह वासना ये जल जाने के बाद उसमे जरासी भी कोई भी वासना जिवीत नही रहती । भक्तका जिस दिन ऐसा समय आता उस दिन उस संत के घटमे पराभक्ती प्रगट हो जाती । फिर उसके विषय वासनाके एक भी कर्म बाकी नही रहते । पराभक्ती प्रगटनेपे उसके पाँचो विषय व पच्चीस विषय प्रकृतीयाँ मर जाती जैसे घोडेस्वार घोडे पे सवार रहता वैसे वे संत रजोगुण तमोगुण के उपर सवार रहते इन गुणोको वासनाओके कर्मोमे लगने नही देते वे शब्द,स्पर्श, रुप,रस,गंध,चित्त,मन,बुध अहंकार इस नौ तत्तके देहको मारते व उसे मारकर सिध्दाशिला लांघते । जैसे विवाहित पतिव्रता स्त्रि विवाह होने पे मायका त्यागकर पतीके घर जाती व पतीका सुख लेती । उसे पतीका सुख समजने पे वह जैसे मायके की प्रीती त्याग देती व पती के प्रिती मे रचमच जाती वैसे ही पराभक्त सतस्वरुप मे पहुँचने पे विषय वासनाओकी प्रिती त्यागकर सतस्वरुप विग्यान वैराग्य के समाधी सुखमे रचमच जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।८।।

**।। इति पराभक्ति का अंग सम्पूर्ण ।।**